अध्ययनात्	निमित्तात्	(अध्ययन के लिए)
अध्ययनस्य	निमित्तस्य	(अध्ययन के लिए)
अध्ययने	निमित्ते	(अध्ययन के लिए)

पष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन

अतसुच् (तस्) प्रत्ययान्त शब्दों (उत्तरतः, दक्षिणतः आदि) तथा इस प्रत्यय का अर्थ रखनेवाले प्रत्ययान्त (उपरि, अधः, अग्रे, आदौ, पुरः आदि) की जिससे समीपता पायी जाती है, उसमें षष्ठी होती है,

यथा

ग्रामस्य दक्षिणतः उत्तरतः वा ।

गृहस्योपरि, अग्रे, पुरः, पश्चाद् वा।

पतिव्रतानाम् अग्रे कीर्तनीया सावित्री।

तस्य स्थित्वा कथमपि पुरः कौतकाधानहेतोः (मेघदूते)

दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम्

दूर, अन्तिक (समीप) तथा इनके अर्थवाची शब्दों का प्रयोग होने पर षष्ठी तथा पञ्चमी होती है,

यथा -

ग्रामस्य ग्रामाद् वा दूर वनम् । (वन ग्राम से दर है।)

सारनाथः वाराणस्याः समीपम् (सारनाथ बनारस के समीप है।)

प्रत्यासन्नः माधवीमण्डपस्य (माधवी लाताकुंज के पास)।

अधीगर्थदयेशां कर्मणि

अधि+ √इ धातु (स्मरण करना), √दय् (दया करना), √ईश् (समर्थ होना) तथा इन धातुओं की अर्थवाची धातुओं के कर्म में षष्ठी होती है,

यथा-

मातुः स्मरति (माता की याद करता है)।

रामस्य दयमानः (रामके ऊपर दया करता हुआ)।

गात्राणाम् अनीशोऽस्मि संवृतः (मैं अपने अंगों का स्वामी न रहा)।

प्रभवति निजस्य कन्यकाजनस्य महाराजः (महाराज अपनी पुत्री के ऊपर समर्थ हैं।)

विशेष-

जब √स्मृ धातु अपने साधारण अर्थ (पाठ करना) में प्रयुक्त होती है, तब उसके कर्म में द्वितीया ही आती है,

यथा- स्मरसि तान्यहानि स्मरसि गोदावरीं वा।

यहाँ कर्म का व्यक्त किया जाना अभीष्ट है (यदा कर्म विवचितं भवति तदा षष्ठी न भवति)।

“जाननेवाला". या ‘परिचित' या 'सावधान' इन अर्थों का बोध करनेवाले विशेषणों तथा इनके उलटे अर्थों का बोध करानेवाले विशेषणों के योग में कर्म में षष्ठी होती है।

यथा-अनभिज्ञो गुणानां यः स भृत्यैर्नानुगम्यते (जो गुणों को नहीं जानता उसका नौकर अनुसरण नहीं करते ।) अनभ्यन्तरे आवां मदनगतस्य वृत्तान्तस्य ।

कभी-कभी सप्तमी का भी प्रयोग होता है,

यथा-यदि त्वमीदृशः कथायामभिज्ञः । तत्राप्यभिज्ञो जनः ।

कर्तृकर्मणोः कृति

कृदन्त शब्दों के कर्त्ता और कर्म में षष्ठी होती है। कृदन्त शब्द अर्थात् जिनके अंत में कृत् प्रत्यय – त्रिच् (तृ)घञ् (अ) ल्युट् (अन्), क्तिन (ति) ण्वुल् (अक) आदि रहते है।

यथा-

शिशोः रोदनम् (बच्चे का रोना)

कालस्य गतिः (समय की चाल)

पुस्तकस्य पाठः (पुस्तक का पढ़ना)

राक्षसानां घातः (राक्षसों का वध)

राज्यस्य प्राप्तिः (राज्य की प्राप्ति),

शास्त्राणां परिचयः

(शास्त्रों का ज्ञान)

क्रियामिमां कालिदासस्य

(कालिदास की इस क्रिया को)

यतश्च निर्धारणम्

एक समुदाय में से एक वस्तु जब विशिष्टता दिखलाकर छांट दी जाती है तब जिससे छांटा जाय उसमें षष्ठी या सप्तमी होती है,

यथा- कवीनां कविषु वा कालिदासः श्रेष्ठः (कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।)

छात्राणां छात्रेषु वा गोपालः पटुतमः ।

चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः

आशीर्वाद देने की इच्छा होने पर आयुष्य, मद्र, भद्र, कुशल, सुख, अर्थ, हित तथा इनके पर्यायवाची शब्दों के साथ चतुर्थी या षष्ठी होती है,